कश्मीर समस्या और उसका समाधान

श्री तेजपाल सिह
परिचर
द्वितीय- पुरस्कार

कश्मीर एक परिचय -

कश्मीर को भारत का मुकुट कहा जाता है यह राज्य भारत के उत्तर में स्थित है। इसके उत्तर पूर्वी सीमा से चीन स्पर्श करता है। उत्तर पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से संलग्न है तथा पश्चिमी सीमा से पंजाब व हिमांचल प्रदेश छूते हैं।

स्वतन्त्रता के पूर्व इस राज्य में हरिसिंह नाम का स्ततंत्र राजा राज्य करता था। मजे की बात यह है कि यहां पर रहने वाली प्रजा मुस्लिम अधिकांशतः थी और राजा हिन्दू था। भारत बटवारे के समय इसने किसी भी देश में मिलने से इंकार कर दिया था। तभी पाकिस्तान ने इस पर आक्रमण कर अपना कब्जा जमाना चाहा। परन्तु हरिसिंह ने भारत में विलय की इच्छा प्रकट की और भारत ने पाकिस्तान के आक्रमण का मुह तोड़ जवाब दिया। इस प्रकार कश्मीर भारत का एक अभिन्न अंग बन गया। यह जम्मू कश्मीर के नाम से भारतीय संघ में सामिल हुआ। इसकी ग्रीष्म कालीन राजधानी श्रीनगर एवं जाड़ों की राजधानी जम्मू है।

कश्मीर समस्या का जन्म -

कश्मीर का प्रादुर्भाव होते ही पाकिस्तान की गिद्द दृष्टि इस प्रान्त पर लग गयी थी और उसने इसे हड़पने के अनेक प्रयास किये। पाकिस्तान ने १९६५ और १९७१ में आक्रमण करके इसे भी हड़पना चाहा परन्तु भारत ने पाक के इस इरादे को पूर्ण नही होने दिया।

यह भी सत्य है कि जब कोई सामने के दरवाजे से अन्दर न घुस सके तो वह पीछे के दरवाजे से प्रयास करता है। यही पाकिस्तान ने किया। उसने वहां आतंकवाद को जन्म दिया। आज कश्मीर आंतकवाद की भयंकर चपेट में आ चुका है और आतंकवाद के कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न हो चुकी है जिसका विस्तार से वर्णन इस प्रकार है।

आतंकवाद -

कश्मीर सीमावर्ती प्रान्त होने के कारण आतंकवाद का शिकार शीघ्रता से हो गया। आज पाकिस्तान की सहायता से कश्मीर में अनेक आतंकवादी संगठन कार्य कर रहे है। जैसे हिजबुल मुजाहिद्दीन, हरकत उल अंसार, आदि भयंकर उग्रवादी संगठन कश्मीर में तबाही मचाये हुए है।

आज कश्मीर वासी आतंकावादी गतिविधियों से पीड़ित हैं। इस आतंकवाद को पनपने देने के भी अनेक कारण हैं।

कश्मीर में आतंकवाद बढ़ने के कारण -

१. धार्मिक कट्टरता- कश्मीर भारतीय गणराज्य का एक प्रान्त होते हुए भी उसको धारा ३७० के द्वारा विशेष राज्य का दर्जा मिला हुआ है। परन्तु फिर भी वहां के निवासी खुश नही हैं। कारण हैं धार्मिक

कट्टरता । भारत एक धर्मनिर्पेक्ष राष्ट्र है । कश्मीर की अधिकांश जनसंख्या मुस्लिम है जो कि धार्मिक कट्टरता से ओतप्रोत है ।

२. अलगाववाद की भावना - पाकिस्तान जब आक्रमण के द्वारा कश्मीर को हड़पने में सफल नही हुआ तो उसने कश्मीर में आई एस आई का जाल बिछाया और धार्मिक जेहाद के नाम पर कश्मीरवासियों को भड़काया, और इसके साथ-साथ वहां आतंकवादी संगठनों को जन्म दिया । ये आतंकवादी संगठन में कश्मीर मे खून की होली खेल रहे हैं ।

३. सीमा सुरक्षाबलों की कमजोरी- भारत को प्राचीन इतिहास से सबक लेना चाहिए था । प्राचीन समय से भारत में उत्तरी पश्चिमी सीमापार से आक्रमणकारी आते रहे हैं । सिकन्दर, महमूद गजनवी, मौ० गौरी, तैमूर, बाबर आदि आक्रमणकारी भारत में आये ।

बहुत बिडम्बना की बात है किसी के घर में सरलता से चोर घुस जाये और उसे तब पता चले जब चोर घर पर कब्जा कर बैठ जाये । ऐसा ही भारत के साथ हुआ । भारत में सीमा पार से आतंकवादी भारी मात्रा में हथियार लेकर सीमा के अंदर घुस आते हैं और भारत के सीमा रक्षक दल कुछ नहीं करपाते । यह ठीक है कि पाकिस्तान से लगी सीमा पहाड़ी क्षेत्र और बर्फिला व बीहड़ क्षेत्र है परन्तु किसी भी प्रकार अपने घर की रखवाली तो करनी ही चाहिए । भारत सीमा रक्षक संघ इस काम में असफल रहा ।

आतंकवाद के कारण उत्पन्न समस्यायें -

आज कश्मीर में बढ़ते आतंकवाद के कारण छोटी मोटी अनेक समस्यायें उत्पन्न हो गयी हैं । जो इस प्रकार है ।

क - कश्मीर में आज पूरी तरह शान्ति भंग हो चुकी है ।

ख - वहां के उद्योग धंधे चोपट हो गये हैं ।

ग - कश्मीर मुख्यतः पर्यटक पर निर्भर है । आतकंवादी गतिविधियों के चलते कश्मीर में पर्यटन पूरी तरह ठप हो चुका है ।

घ - कश्मीर में हिन्दू पण्डितों, बोद्धों व सिक्खों के समुदायों को पूरी तरह तबाह कर दिया गया ।

ड़ - कोइ भी राष्ट्र, राज्य या समाज अधिक दिनों तक आतंकवादी गतिविधियों को नहीं झेल सकता वहां पर पूंजीपति, निवेश नहीं करेंगे उद्योगो का विकास नहीं होगा । भुखमरी फैलेगी और लोगों की नींद हराम हो जायेगी । आज यहीं स्थिति कश्मीर की हो चुकी है । केन्द्र सरकार का दोष हो या राज्य सरकार का परन्तु कश्मीर में उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त अनेक कारण भी ऐसे रहे जिनके कारण कश्मीर बरबाद हो गया ।

कश्मीर समस्या का समाधान -

प्रत्येक समस्या का कोई न कोई समाधान अवश्य है । निम्न उपायों के द्वारा कश्मीर समस्या का समाधान किया जा सकता है ।

१. पड़ोसी देश पाकिस्तान व आतंकवादी संगठनों से बात करके - भारत को चाहिए कि कुछ विशेषज्ञों द्वारा कश्मीर की समस्या को जाना जाये व इसका विश्लेषण कर पाकिस्तान से उच्च स्तर पर

अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बनाकर समस्या को मिल बैठकर सुलझाया जाये । हमारा पड़ोसी देश क्या चाहता है कश्मीर के आतकंवादी संगठन क्या चाहते है, कश्मीर की जनता क्या चाहती है ?

२. संवैधानिक पक्षों को ध्यान में रखते हुए कार्यवाही करना - यदि उपरोक्त तीनो पक्ष भारतीय संविधान के अन्तर्गत समझौता करने को तैयार हों तो भारत को पहल करनी चाहिए ।

३. सीमा सुरक्षाबालों को सुदृढ व मजबूत किया जाये - सीमापार से आतंकवादी प्रशिक्षण लेकर उन्नत तकनीक के हथियार लेकर भारत की सीमा में घुसते हैं । सीमा सुरक्षा बलों के पास वहीं पुराने घिसे पीटे हथियार होते हैं । वे उनका मुकाबला करने में सक्षम नहीं हैं । अतः भारतीय सीमा सुरक्षा बलों को शक्तिशाली बनाया जाये ।

४. कश्मीर की जनता की भावना को जानकर वहां उन्हें भारतीय पक्ष का समर्थक बनाया जाये ।
५. कश्मीर से धारा ३७० खत्म करके उसे भारतीय संविधान की मुख्य धारा में जोड़ा जाये ।
६. केन्द्र सरकार को उदासीन नहीं रहना चाहिए । संवैधानिक उपायों के द्वारा जब कोई समस्या नहीं सुलझती तो शक्ति का प्रयोग करना चाहिए ।
७. कश्मीर आज आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा प्रान्त है । वहां शिक्षा का विस्तार करके युवकों को रोजगार के साधन उपलब्ध कराये जायें ।
८. एक अर्थशास्त्री के अनुसार खाली मस्तिष्क शैतान का घर होता है । अतः वहां की राज्य सरकार को कश्मीर वासियों की समस्या को गम्भीरता से सुलझाया जाये ।

इस प्रकार हम कह सकते है कि लड़ाई किसी समस्या का समाधान नहीं होती । कश्मीर में रक्तपात बहुत हो चुका आज किसी भी प्रकार इसे बन्द कराना चाहिए । उपरोक्त कारण व निवारण के द्वारा किसी सीमा तक कश्मीर समस्या को समाप्त किया जा सकता हे ।

***